भारतीय रेल • INDIAN RAILWAYS

पश्चिम रेलवे
Western Railway

ई-राजहंस

प्रधान कार्यालय- पश्चिम रेलवे

ई _ राजहंस

पश्चिम रेलवे - प्रधान कार्यालय ,

चर्चगेट, मुंबई

अप्रैल से जून-2018

अंक - 34

ई-राजहंस

संरक्षक
अनिल कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक पश्चिम रेलवे

परामर्शदाता
एम. के. गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक
डॉ. सुशील कुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री अशोक कुमार लोंढे, वराधि
श्री हरीश चन्द्र, वरि. अनु.
सरोज कुमार, क. अनु.
हरेन्द्र कु. यादव, क. अनु.
आशीष चौधरी, क. अनु.

छायांकन एवं अभिकल्पना
राकेश कुमार सुमन, गोप.सहा.

अनुक्रमणिका

1. महाप्रबंधक महोदय का संदेश 1
2. मुख्य राजभाषा अधिकारी महोदय का संदेश 2
3. संपादक की कलम से 3
4. कवि परिचय-देवकीनंदन खत्री 4-5
5. पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की गतिविधियाँ 6-8
6. मनोवैज्ञानिक लेख 9
7. पश्चिम रेलवे समाचार 10-13
8. मुंबई सेंट्रल मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 14
9. ई.एम. यू. कारखाना महालक्ष्मी की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 15
10. लोअर परेल कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 15
11. वड़ोदरा मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 16
12. प्रतापनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 17
13. अहमदाबाद मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 18
14. साबरमती कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 19-20
15. राजकोट मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 21
16. भावनगर मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 22-23
17. भावनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 24
18. रतलाम मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 25-26
19. दाहोद कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ 27

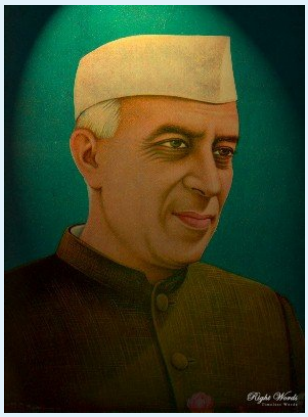

हिन्दी एक जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, देश को उतना ही लाभ होगा।

-जवाहर लाल नेहरू

महाप्रबंधक महोदय का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ' ई-राजहंस ' राजभाषा पत्रिका का 34 वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। आज हिंदी ज्ञान-विज्ञान, विज्ञापन, कंप्यूटर, इंटरनेट एवं सभी संप्रेषण माध्यमों की लोकप्रिय भाषा बन चुकी है क्योंकि हिंदी को आम जनता अच्छी तरह समझती है और इसका प्रयोग करती है। इसमें संदेह नहीं है कि हिंदी का साहित्य काफी समृद्ध है और इसकी लिपि भी वैज्ञानिक है। हिंदी भारतीय एकता और अखंडता को भी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए पश्चिम रेलवे के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से हिंदी में कार्य करना चाहिए। भारतीय संविधान के अनुसार राजभाषा में कार्य करना भारत के प्रत्येक नागरिक का नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है।

भारतीय रेलवे ने पूरे भारत में राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने के लिए विशेष योगदान दिया है परन्तु अभी भी इस मामले में और अधिक प्रभावी प्रयास अपेक्षित हैं। प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी के सरल, सहज एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करके राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास में विशेष योगदान दे सकता है।

प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा तैयार ई-पत्रिका में प्रेरणादायक एवं रोचक रचनाएं, समसामयिक विषयों, राजभाषा नीति एवं पश्चिम रेलवे पर गत तिमाही में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इस ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और शुभकामनाएं देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि प्रधान कार्यालय का राजभाषा विभाग यह ई-पत्रिका निरंतर तैयार करता रहेगा और यह तिमाही पत्रिका पश्चिम रेलवे के अधिकारियों/कर्मचारियों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

शुभ कामनाओं सहित.....

अनिल कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक,पश्चिम रेलवे

मुराधि महोदय का संदेश

भारतीय रेल राजभाषा हिंदी के निरन्तर प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है और पश्चिम रेलवे भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरुप हिंदी को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सदैव अग्रणी रही है। पश्चिम रेलवे अपने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सतर्कता, सक्रियता, एकजुटता और सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इसके लिए मैं पश्चिम रेलवे के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके भारतीय संविधान के प्रति अपनी निष्ठा भावना का परिचय देंगे।

पश्चिम रेलवे में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रधान कार्यालय, समस्त मंडलों तथा कारखानों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी प्रशिक्षणों, हिंदी पुस्तकालयों का संचालन, हिंदी प्रतियोगिताओं एवं अन्य कार्यक्रमों/गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जा रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा, प्रोत्साहन और सदभावना है इसलिए पश्चिम रेलवे पर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से गृह मंत्रालय और रेलवे बोर्ड की सभी हिंदी प्रोत्साहन योजनाएं शुरु की गई हैं।

पश्चिम रेलवे में राजभाषा कार्यान्वयन में हो रही प्रगति की समीक्षा के लिए क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की, मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समितियों एवं उनके अधीन स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तथा कारखानों की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की रेलवे बोर्ड द्वारा जारी मानकों के अनुसार समय-समय पर तिमाही बैठकें आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, सभी मदों में हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु प्रधान कार्यालय, समस्त मंडल कार्यालयों और कारखाना कार्यालयों के अधिकारियों द्वारा अपने-अपने विभागों के अलावा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण भी किए जाते हैं।

हिंदी आम जनता की बोलचाल की भाषा है अतः इसका अधिकाधिक प्रयोग देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है। आजकल आम जनता विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ वेबसाइटों से प्राप्त कर रही है इसलिए यह आवश्यक है कि साइटों पर सभी प्रकार की सूचनाएँ अंग्रेजी के साथ-साथ यूनिकोड फॉन्ट के माध्यम से हिंदी में भी सरल, सहज एवं प्रचलित शब्दों में अनिवार्य रुप से उपलब्ध करवाई जाएं।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने का संकल्प करें ताकि यह रेल के साथ-साथ देश के विकास में और अधिक सहायक हो।

एम. के. गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण)

संपादक की कलम से

पश्चिम रेलवे की 'ई-राजहंस' पत्रिका का 34वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा पत्रिकाएं जहाँ एक तरफ रचनाकारों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं, वहीं दूसरी तरफ इन पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों को सम्बद्ध कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है। वास्तव में इन पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालयों में राजभाषा में कार्य करने का एक अनुकूल वातावरण बनता है।

भाषा मानव जीवन तथा समाज का अभिन्न अंग है क्योंकि इसके द्वारा केवल विचारों, सूचनाओं तथा भावों का ही सम्प्रेषण नहीं होता है बल्कि यह तथ्यों के मूल्यांकन, गहन चिंतन एवं समस्त व्यवहार का भी आधार है। अतः सामाजिक कल्याण और विकास के कार्यक्रमों की सफलता भी भाषा पर निर्भर करती है। यह भी सत्य है कि जब हम मातृभाषा में अपने विचारों को व्यक्त करते हैं तब सृजनता में मौलिकता की संभावना अधिक रहती है।

हिंदी भाषा का शब्द भंडार और साहित्य पर्याप्त समृद्ध है और इसकी लिपि भी वैज्ञानिक है। भारतीय रेल की भांति हिंदी भी सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने में पूर्णतया सक्षम है। इसलिए हिंदी के महत्व को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रुप में स्वीकार किया गया था। अतः भारत के प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने समस्त कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करे।

इस अंक को पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, सूचनापरक एवं रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। इस अंक में पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय, सभी मंडलों एवं कारखानों द्वारा अप्रैल से जून 2018 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों को संकलित किया गया है।

अंत में मैं आशा करता हूँ कि 'ई-राजहंस' पत्रिका पश्चिम रेलवे के समस्त कार्यालयों की राजभाषा-कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करने के साथ-साथ कर्मचारियों के कलात्मक पक्ष को भी निरन्तर उजागर करती रहेगी।

डॉ. सुशील कुमार शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

कवि परिचय- बाबू देवकीनन्दन खत्री

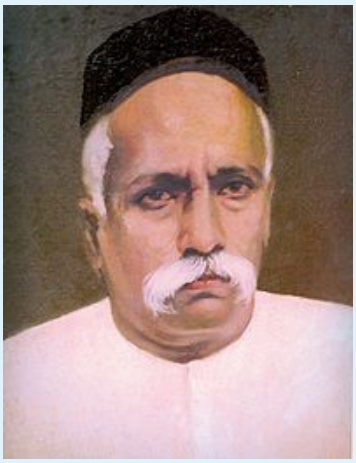

बाबू देवकीनन्दन खत्री (29 जून 1861 - 1 अगस्त 1913) हिंदी के प्रथम तिलिस्मी लेखक थे। उन्होने चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति, काजर की कोठरी, नरेंद्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेंद्र वीर, गुप्त गोंडा, कटोरा भर, भूतनाथ जैसी रचनाएं की। 'भूतनाथ' को उनके पुत्र दुर्गा प्रसाद खत्री ने पूरा किया। हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में उनके उपन्यास चंद्रकांता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस उपन्यास ने सबका मन मोह लिया। इस किताब के रसास्वादन के लिए कई गैर-हिंदीभाषियों ने हिंदी सीखी। बाबू देवकीनंदन खत्री ने 'तिलिस्म', 'ऐय्यार' और 'ऐय्यारी' जैसे शब्दों को हिंदीभाषियों के बीच लोकप्रिय बनाया। जितने हिन्दी पाठक उन्होंने (बाबू देवकीनन्दन खत्री ने) उत्पन्न किये उतने किसी और ग्रंथकार ने नहीं।

जीवनी

देवकीनन्दन खत्री जी का जन्म 29 जून 1861 (आषाढ़ कृष्णपक्ष सप्तमी संवत् 1918) शनिवार को पूसा, मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ था। उनके पिता का नाम लाला ईश्वरदास था। उनके पूर्वज पंजाब के निवासी थे तथा मुग़लों के राज्यकाल में ऊँचे पदों पर कार्य करते थे। महाराज रणजीत सिंह के पुत्र शेरसिंह के शासनकाल में लाला ईश्वरदास काशी में आकर बस गये। देवकीनन्दन खत्री जी की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू-फ़ारसी में हुई थी। बाद में उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी का भी अध्ययन किया।

आरंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद वे गया के टेकारी इस्टेट पहुंच गई और वहां के राजा के यहां नौकरी कर ली. बाद में उन्होंने वाराणसी में एक प्रिंटिंस प्रेस की स्थापना की और 1883 में हिंदी मासिक 'सुदर्शन' की शुरुआत की.

देवकीनन्दन खत्री जी का काशी नरेश ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह से बहुत अच्छा सम्बंध था। इस सम्बंध के आधार पर उन्होंने चकिया (चकिया, उत्तर प्रदेश) और नौगढ़ के जंगलों के ठेके लिये। देवकीनन्दन खत्री जी बचपन से ही सैर-सपाटे के बहुत शौकीन थे। इस ठेकेदारी के काम से उन्हे पर्याप्त आय होने के साथ ही साथ उनका सैर-सपाटे का शौक भी पूरा होता रहा। वे लगातार कई-कई दिनों तक चकिया एवं नौगढ़ के बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की खाक छानते रहते थे। कालान्तर में जब उनसे जंगलों के ठेके छिन गये तब इन्हीं जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की पृष्ठभूमि में अपनी तिलिस्म तथा ऐयारी के कारनामों की कल्पनाओं को मिश्रित कर उन्होंने चन्द्रकान्ता उपन्यास की रचना की।
बाबू देवकीनन्दन खत्री ने जब उपन्यास लिखना शुरू किया था उस जमाने में अधिकतर लोग भी उर्दू भाषा भाषी ही थे। ऐसी परिस्थिति में खत्री जी का मुख्य लक्ष्य था ऐसी रचना करना जिससे देवनागरी हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो। यह उतना आसान कार्य नहीं था। परन्तु उन्होंने ऐसा कर दिखाया। चन्द्रकान्ता उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि जो लोग हिन्दी लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे या उर्दूदाँ थे, उन्होंने केवल इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। इसी लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इसी कथा को आगे बढ़ाते हुए दूसरा उपन्यास "चन्द्रकान्ता सन्तति" लिखा जो "चन्द्रकान्ता" की अपेक्षा कई गुणा रोचक था। इन उपन्यासों को पढ़ते वक्त लोग खाना-पीना भी भूल जाते थे। इन उपन्यासों की भाषा इतनी सरल है कि इन्हें पाँचवीं कक्षा के छात्र भी पढ़ लेते हैं। पहले दो उपन्यासों के 2000 पृष्ठ से अधिक होने पर भी एक भी क्षण ऐसा नहीं आता जहाँ पाठक ऊब जाए।

मुख्य रचनाएँ

चन्द्रकान्ता (1888 - 1892): चन्द्रकान्ता उपन्यास को पढ़ने के लिये लाखों लोगों ने हिंदी सीखी। यह उपन्यास चार भागों में विभक्त है।
चन्द्रकान्ता सन्तति (1894- 1904): चन्द्रकान्ता की अभूतपूर्व सफलता से प्रेरित हो कर देवकीनन्दन खत्री जी ने चौबीस भागों वाली विशाल उपन्यास चंद्रकान्ता सन्तति की रचना की। उनका यह उपन्यास भी अत्यन्त लोकप्रिय हुआ।
भूतनाथ (1907 - 1913) (अपूर्ण): चन्द्रकान्ता सन्तति के एक पात्र को नायक का रूप देकर देवकीनन्दन खत्री जी ने इस उपन्यास की रचना की। किन्तु असामायिक मृत्यु के कारण वे इस उपन्यास के केवल छः भागों को लिख पाये उसके बाद के शेष पन्द्रह भागों को उनके पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री ने लिख कर पूरा किया। 'भूतनाथ' भी कथावस्तु की अन्तिम कड़ी नहीं है। इसके बाद बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित रोहतासमठ (दो खंडों में) आता है। कथा यहाँ भी समाप्त नहीं होती। प्रकाशक (लहरी बुक डिपो, वाराणसी) से पूछताछ करने पर पता चला कि इस कथा की अन्तिम कड़ी शेरसिंह लिखी जा रही है।

अन्य रचनाएँ-कुसुम कुमारी,वीरेन्द्र वीर उर्फ कटोरा भर खून,काजर की कोठरी,नरेन्द्र मोहिनी,गुप्त गोदना,काजर की कोठरी,

व्यवसाय की शुरुआत

मुजफ़्फ़रपुर देवकीनन्दन खत्री के नाना-नानी का निवास स्थान था। आपके पिता 'लाला ईश्वरदास' अपनी युवावस्था में **लाहौर** से **काशी** आए थे और यहीं रहने लगे थे। देवकीनन्दन खत्री का **विवाह** मुजफ़्फ़रपुर में हुआ था, और **गया ज़िले** के टिकारी राज्य में अच्छा व्यवसाय था। आरंभिक शिक्षा समाप्त कर वे 'टेकारी इस्टेट' पहुँच गये और वहाँ के राजा के यहाँ कार्य करने लगे। बाद में उन्होंने **वाराणसी** में एक प्रिंटिंस प्रेस की स्थापना की और 1883 में हिन्दी मासिक पत्र 'सुदर्शन' को प्रारम्भ किया।

लेखन की प्रेरणा

कुछ दिनों बाद उन्होंने महाराज बनारस से चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका ले लिया था। इस कारण से देवकीनंदन की युवावस्था अधिकतर उक्त जंगलों में ही बीती थी। देवकीनन्दन खत्री बचपन से ही घूमने के बहुत शौकीन थे। इस ठेकेदारी के कार्य से उन्हें पर्याप्त आय होने के साथ-साथ घूमने फिरने का शौक़ भी पूरा होता रहा। वह लगातार कई-कई दिनों तक चकिया एवं नौगढ़ के बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की खाक छानते रहते थे। बाद में जब उनसे जंगलों के ठेके वापिस ले लिए गये, तब इन्हीं जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की पृष्ठभूमि में अपनी तिलिस्म तथा ऐय्यारी के कारनामों की कल्पनाओं को मिश्रित कर उन्होंने 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास की रचना की। इन्हीं जगंलों और उनके खंडहरों से देवकीनन्दन खत्री को प्रेरणा मिली थी, जिसने 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति', 'भूतनाथ' ऐसे ऐय्यारी और तिलस्मी उपन्यासों की रचना कराई, जिसने आपको **हिन्दी साहित्य** में अमर बना दिया। आपके सभी उपन्यासों का सारा रचना तंत्र बिलकुल मौलिक और स्वतंत्र है। इस तिलस्मी तत्व में आपने अपने चातुर्य और बुद्धि-कौशल से ऐय्यारी वाला वह तत्व भी मिला दिया था, जो बहुत कुछ भारतीय ही है। यह परम प्रसिद्ध बात है कि 19वीं शताब्दी के अंत में लाखों पाठकों ने बहुत ही चाव और रुचि से आपके उपन्यास पढ़े और हज़ारों आदमियों ने केवल आपके उपन्यास पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। यही कारण है कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक श्री **वृंदावनलाल वर्मा** ने आपको हिन्दी का 'शिराज़ी' कहा है।

चन्द्रकांता की रचना

बाबू देवकीनन्दन खत्री ने जब **उपन्यास** लिखना प्रारम्भ किया, उस समय में अधिकतर **हिन्दू** लोग भी **उर्दू भाषा** ही जानते थे। इस प्रकार की परिस्थितियों में खत्री जी ने मुख्य लक्ष्य बनाया, ऐसी रचना करना जिससे **देवनागरीहिन्दी** का प्रचार व प्रसार हो। यह इतना सरल कार्य नहीं था। किंतु उन्होंने ऐसा कर दिखाया। 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि उस समय जो लोग हिन्दी लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे या केवल **उर्दू भाषा** ही जानते थे, उन्होंने केवल इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी इसी लोकप्रियता को ध्यान में रख कर उन्होंने इसी कथा को आगे बढ़ाते हुए दूसरा उपन्यास 'चन्द्रकान्ता सन्तति' लिखा, जो 'चन्द्रकान्ता' की अपेक्षा अधिक रोचक था। इन उपन्यासों को पढ़ते समय पाठक खाना-पीना भी भूल जाते थे। इन उपन्यासों की भाषा इतनी सरल है कि पाँचवीं कक्षा के छात्र भी इन पुस्तकों को पढ़ लेते हैं। पहले दो उपन्यासों के 2000 पृष्ठ से अधिक होने पर भी, एक भी क्षण ऐसा नहीं आता, जहाँ पाठक ऊब जाएँ।

चंद्रकांता से उत्साहित होकर आपने चंद्रकांता संतति, लिखना आरंभ कर दिया जिसके कुल 24 भाग हैं। दस वर्षो में ही बहुत अधिक कीर्ति और यश संपादित कर चुकने पर और अपनी रचनाओं का इतना अधिक प्रचार देखने पर सन्1898 ई में आपने अपने निजी प्रेस की स्थापना की। आप सदा से स्वभावत: बहुत ही 'लहरी' अर्थात् मनमौजी और विनोदप्रिय थे। इसीलिए देवकीनन्दन खत्री ने अपने प्रेस का नाम भी 'लहरी प्रेस' रखा था। देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों में कई ऐय्यारों और पात्रों के जो नाम आए हैं वे सब आपने अपनी मित्रमंडली में से ही चुने थे और इस प्रकार उन्होंने अपने अनेक घनिष्ट मित्रों और संगी साथियों को अपनी रचनाओं के द्वारा अमर बना दिया था।

हिन्दी साहित्य में स्थान

देवकीनन्दन खत्री की सभी कृतियों में मनोरंजन की जो इतनी अधिक कौतूहलवर्धक और रोचक सामग्री मिलती है, उसका सारा श्रेय देवकीनन्दन खत्री के अनोखे और अप्रतिम बुद्धिबल का ही है। **हिन्दी** के औपन्यासिक क्षेत्र का आपने आरंभ ही नहीं किया था, उसमें उन्होंने बहुत ही उच्च, उज्ज्वल और बेजोड़ स्थान भी प्राप्त कर लिया था। **भारतेंदु** के उपरांत आप प्रथम और सर्वाधिक प्रकाशमान तारे के रूप में **हिन्दी साहित्य** में आए थे।

निधन

खेद है कि देवकीनन्दन खत्री ने अधिक आयु नहीं पाई और प्राय: 52 वर्ष की अवस्था में ही **काशी** में 1 **अगस्त**, 1913 को आप परलोकवासी हो गए।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 22-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता।

दिनांकः 22-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए सदस्यगण।

दिनांकः 22-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान गृह पत्रिका ' राजभाषा प्रवाह ' का विमोचन करते हुए महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता एवं अन्य अधिकारीगण।

दिनांकः 22-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान नराकास द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता।

दिनांकः 22-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 11-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए उप महाप्रबधक(राजभाषा) डॉ. सुशील कुमार शर्मा।

दिनांकः 11-05-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागिता करते हुए प्रधान कार्यालय के अधिकारी एवं

दिनांकः 11-05-2018 को प्रधान कार्यालय में अनुवादकों के लिए आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागिता करते हुए पश्चिम रेलवे के अनुवादक।

दिनांकः 13-06-2018 को रेलवे बोर्ड के आदेशानुसार प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय स्तर की हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारुप लेखन एवं वाक् प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निभाते हुए अधिकारीगण।

दिनांकः 13-06-2018 को रेलवे बोर्ड के आदेशानुसार प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय स्तर की हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारुप लेखन एवं वाक् प्रतियोगिता में सहभागिता करते हुए कर्मचारीगण।

पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 19-06-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता।

दिनांकः 19-06-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सदस्य सचिव एवं उप महाप्रबंधक (राजभाषा)।

दिनांकः 19-06-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए अधिकारीगण।

दिनांकः 19-06-2018 को प्रधान कार्यालय में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता एवं अन्य अधिकारीगण।

मनोवैज्ञानिक लेख- मनोवैज्ञानिक कारणों से हो सकती है साँसें तेज चलने की समस्या

विनिता की उम्र 22 वर्ष है। जब कभी उसके सामने कोई घटनाएँ हो जाती हैं तो उसकी साँसें एवं धड़कनें तेज हो जाती है। दिमाग कुछ काम नहीं करता है। चक्कर आने **लगते हैं**। उसे लगता है जैसे वह बेहोश हो जायेगी।

वस्तुतः विनिता की समस्या एक आम क्लीनिकल सिंड्रोम है। इस समस्या को लोग प्रायःउपेक्षित करते रहते हैं। इस पर तब तक ध्यान नहीं दिया जाता है जब तक यह गंभीर रुप नहीं ले लेता है। इस सिंड्रोम से पीड़ित व्यक्ति की साँसें तेजी से चलने लगती है।

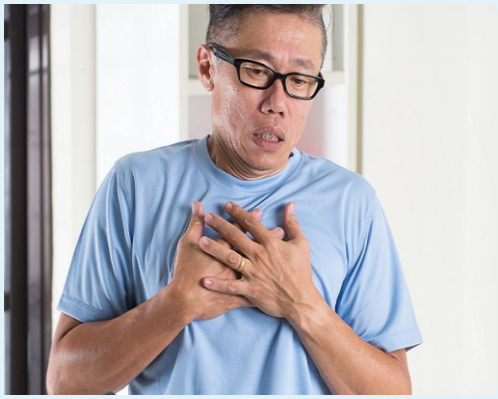

इसकी शुरुआत तब होती है जब व्यक्ति संवेगात्मक रुप से उद्वेलित हो जाता है या वह सामाजिक दबाव की स्थिति में होता है। रोगी को अत्यधिक थकान, सीने में दर्द, धड़कन तेज होना, सर दर्द, पसीना आना एवं दिमाग में शून्यता महसूस होने लगता है। रोगी की माँसपेशियों में तनाव या टेटैनी होने लगता है। वह बेहोश भी हो सकता है। ये लक्षण रोगी में हाइपोकेपनिया उत्पन्न करता है।

इस रोग को डायग्नोज करना **आसान** होता है। रोगी 2-3 मिनट तक गहरी एवं तेजी से सांसें लेता है तो उसमें इस बीमारी के लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं। अगर यह लम्बे समय तक जारी रहता है तो उसमें टेटैनी एवं बेहोशी की घटनाएँ होने लगती है।

इस समस्या को जैकोबसन प्रोग्रेसीव मसक्यूलर रिलैक्शेसन, स्व-सम्मोहन या सम्मोहन, बायोफीड बैक एवं श्वसन व्यायाम से दूर किया जाना संभव है। रोगी को ब्रीथींग इन बैग टेक्नीक से लाभ होता है। इस प्रविधि में रोगी को एक खास वैग में श्वसन करना होता है।

बैग में श्वसन करने पर रोगी छोड़े गये हवा को फिर से श्वसन करता है। फलतः उसमें कार्बन डायअक्साइड की कमी दूर हो जाती है। रोगी अपने चिंता एवं डिप्रेशन की समस्या का उपचार करायें। योगा, मेडिटेशन एवं साँसों का व्यायाम करना लाभदायक होता है।

डॉ.श्याम किशोर प्रसाद
वैज्ञानिक पर्यवेक्षक,पश्चिम रेलवे,चर्चगेट

पश्चिम रेलवे समाचार

पश्चिम रेलवे पर आतंकवाद निषेध दिवस मनाया गया

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता ने सोमवार, 21 मई, 2018 को आतंकवाद निषेध दिवस के अवसर पर चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय में रेलकर्मियों और अधिकारियों को सभी प्रकार के आतंकवाद एवं हिंसा का विरोध करने और शांति, सामाजिक बंधुत्व तथा आपसी सौहार्द को बढ़ावा देने के साथ मानवीय जीवन एवं मूल्यों के लिए खतरा बनी ताकतों के खिलाफ लड़ने की शपथ दिलवाई। इस मौके पर वरिष्ठ रेल अधिकारी एवं रेलकर्मी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' पर पश्चिम रेलवे के 2 स्टेशनों पर जागरूकता अभियान

'विश्व तम्बाकू निषेध दिवस' के अवसर पर 'आय कैन केयर - आय कैन विन' फाउंडेशन टीम द्वारा चर्चगेट एवं बांद्रा स्टेशन पर 'सेव द यूथ - विन ओवर टोबैको' हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। यह अभियान वरिष्ठ कैंसर सर्जन तथा आय कैन विन फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. पवन गुप्ता एवं पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की श्रीमती रेखा मिश्रा के संयुक्त नेतृत्व में आयोजित किया गया।

इस अभियान के अंतर्गत जनता से किसी भी रूप में तम्बाकू का सेवन न करने के लिए शपथ लेने हेतु अपील की गई तथा उनके समर्थन को दर्शाने हेतु अधिकारियों, पुलिस कर्मियों, व्यापारियों, स्काउट एवं गाइड, पेशेवरों, देशी एवं विदेश पर्यटकों, विद्यार्थियों एवं सभी वर्ग के यात्रियों द्वारा 1000 से अधिक हस्ताक्षर किये। इस अभियान को अच्छा प्रतिसाद मिला तथा इस समाज को तम्बाकू मुक्त बनाने हेतु विभिन्न प्रकार के राय, सुझाव एवं प्रतिबद्धता भी प्राप्त हुई। इस अभियान में कोलाबा स्थित केन्द्रीय विद्यालय 2 के शिक्षकों, नेतृत्वों एवं स्काउट एवं गाइड के 15 से अधिक स्वयंसेवकों ने इस नेक काम में एक चैम्पियन की तरह अपना योगदान दिया। आय कैन केयर ' आय कैन विन फाउंडेशन जो कैंसर के कारणों तथा तम्बाकू के विरुद्ध जागरूकता एवं देखरेख का कार्य करती है, इनके द्वारा तम्बाकू के विरुद्ध जागरूकता हेतु शीघ्र ही मुंबई के मरीन ड्राइव पर एक नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना है। इस अभियान से लोगों में तम्बाकू के उपयोग एवं हमारे जीवन में पड़ने वाले इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता लाने में मदद मिलेगी। इससे जीवन में सकारात्मकता लाने के साथ ही स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत के निर्माण में भी मदद मिलेगी।

हरित पर्यावरण की ओर पश्चिम रेलवे की एक और उपलब्धि

'क्लीन इंडिया-ग्रीन इंडिया' अभियान के अंतर्गत पश्चिम रेलवे द्वारा बायोगैस संयंत्र की स्थापना

हरित पर्यावरण की दिशा में पश्चिम रेलवे ने एक और अहम उपलब्धि दर्ज की है। पश्चिम रेलवे के लिए गर्व की बात है कि मुंबई सेंट्रल में एक सॉलिड वेस्ट डिस्पोजल एंड मैनेजमेंट संयंत्र स्थापित किया गया है। कोच केयर सेंटर के बाहर स्थापित इस संयंत्र ने 23 मई, 2018 से अपना काम शुरू कर दिया है। यह बायोगैस प्लांट ऑर्गेनिक कचरे को गैस में परिवर्तित करेगा, जिसका उपयोग भोजन पकाने में किया जा सकेगा। हरित, स्वास्थ्यकर एवं स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि एवं चतुराईपूर्ण निर्णय है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट की क्षमता 0.5 टन है तथा इसे स्थापित करने में लगभग 50 लाख रु. की लागत आई है। स्टेशन एवं मंडल के बेस किचन एवं मुंबई सेंट्रल कोचिंग डिपो में ट्रेनों के कचरे को एकत्रित किया जा रहा है। श्री भाकर ने बताया कि इन इकाइयों से लगभग 200-250 किलोग्राम ऑर्गेनिक कचरा एकत्रित **किया** जा रहा है। यद्यपि बायोगैस प्लांट में 500 किग्रा ऑर्गेनिक कचरे की क्षमता है।

श्री भाकर ने बताया कि यदि प्लांट को इसके अधिकतम क्षमता पर परिचालित किया जाये तो यह प्रतिदिन एक पूरे एलपीजी सिलेंडर के बराबर गैस का निर्माण कर सकता है। परन्तु वर्तमान में कम मात्रा में कचरा एकत्रित हो रहा है। अतः प्लांट एक एलपीजी सिलेंडर के एक चौथाई से अधिक गैस का ही निर्माण कर पा रहा है। इस बायोगैस प्लांट से न खाना पकाने हेतु न केवल पर्यावरण अनुकूल गैस का निर्माण होगा, बल्कि कचरा निस्तारण प्रणाली को भी मदद मिलेगी। मिश्रित कचरे को एक निर्धारित स्थल पर एकत्रित किया जायेगा तथा इस्तेमाल न किये हुए भोजन, सब्जियों के कूड़े, गोबर, सड़े फलों, फलों के छिलके इत्यादि जैसे बायोडिग्रेबल एवं प्लास्टिक बोतलें, पोलिथीन बैग, पेपर, लकड़ी, अंडे के छिलके इत्यादि जैसे गैर-बायोडिग्रेबल कूड़े को अलग किया जायेगा। कम्पोस्टिंग के ज़रिये ऑर्गेनिक कचरे का उपयोग बायोगैस के निर्माण हेतु किया जायेगा। तैयार बायोगैस को एक स्टोरेज बैलून में स्टोर किया जायेगा तथा आवश्यकतानुसार बेस किचन को इसकी सप्लाई की जायेगी। कूड़े के निस्तारण एवं बायोमास पृथक्करण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) द्वारा निर्धारित मानदंडों का पालन किया जायेगा।

63 वाँ राष्ट्रीय रेल सप्ताह समारोह भोपाल में सम्पन्न
पश्चिम रेलवे को सिविल इंजीनियरी और कार्मिक प्रबंधन के लिए माननीय रेल मंत्री से मिली दो प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शील्ड एवं 7 व्यक्तिगत पुरस्कार

सोमवार, 16 अप्रैल, 2018 को भोपाल में आयोजित 63 वें राष्ट्रीय रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह में पश्चिम रेलवे ने अपनी चमक बिखेरी तथा दो प्रतिष्ठित कार्यकुशलता शील्डों के साथ राष्ट्रीय स्तर के 7 वैयक्तिक पुरस्कार भी हासिल कर अपनी कामयाबी का परचम फहराया। पश्चिम रेलवे ने वर्ष 2017-18 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सिविल इंजीनियरी और कार्मिक प्रबंधन हेतु प्रदान की जाने वाली दो प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शील्ड हासिल की, जिन्हें भोपाल में आयोजित 63 वें राष्ट्रीय रेल सप्ताह अवॉर्ड समारोह में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता के साथ क्रमशः प्रधान मुख्य इंजीनियर श्री आर. के. मीणा तथा प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री संजय सूरी ने माननीय केन्द्रीय रेल एवं कोयला मंत्री श्री पीयूष गोयल एवं मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के हाथों ग्रहण किया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार वर्ष 2017-18 में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए पश्चिम रेलवे के 7 रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राष्ट्रीय वैयक्तिक पुरस्कार प्राप्त किये, जिनमें 1) ट्रैक मेंटेनर श्री अनुराग मौर्या 2) उप मुख्य लेखाधिकारी (सामान्य) श्री आनंद कुमार 3) मंडल परिचालन प्रबंधक श्री आदिश पठानिया 4) वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री पी. राजमोहन 5) वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर श्री पी. के. त्रिपाठी 6) वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर श्री योगेश अंटिल एवं 7) तकनीशियन ग्रेड I श्री यूसुफ खान पठान शामिल हैं। इन्हें ये प्रतिष्ठित पुरस्कार माननीय केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा द्वारा प्रदान किये गये। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए. के. गुप्ता ने सभी **संबंधित** रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन को मुक्त कंठ से सराहते हुए पश्चिम रेलवे के सभी विजेताओं का हार्दिक अभिनंदन किया है।

पश्चिम रेलवे पर मनाया गया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
एक विशिष्ट पहल के रूप में पश्चिम रेलवे की लोकल ट्रेनों में भी किया गया योगाभ्यास

पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय, सभी 6 मंडलों, कारखानों, रेलवे कॉलोनियों एवं रेल इंस्टिट्यूटों में बुधवार, 21 जून, 2018 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय में अंतर्राष्टीय योग दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के गुप्ता ने की।

इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के योगाभ्यास वाले 'कॉमन योग प्रोटोकॉल' शीर्षक से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक, विभिन्न विभागों के प्रधान विभागाध्यक्षों, अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा प्रधान कार्यालय की महिला कर्मचारियों ने "कैवल्यधाम हेल्थ एंड योगा रिसर्च सेंटर-मुंबई" के पेशेवर योग प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न योग आसनों का प्रदर्शन किया। सीवायपी के भाग के रूप में चुनिंदा आसन एवं अभ्यास कराये गये जो सभी आयु एवं विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत लोगों के लिए स्वास्थ्यकर एवं लाभकारी हैं। सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नियमित योग अभ्यास करने का संकल्प महाप्रबंधक द्वारा कराया गया। इस कार्यक्रम में पेशेवर योग अनुदेशकों द्वारा प्रतिभागियों को योग आसनों एवं तनाव से बचने के मार्गदर्शन एवं तरीकों के बारे में भी बताया गया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, योग प्रशिक्षकों के एक समूह द्वारा एक अभिनव संकल्पना को साकार किया गया, जिसके अंतर्गत पश्चिम रेलवे के लोकल ट्रेनों में विभिन्न योगाभ्यास किया गया। इस 20 सदस्यीय योग शिक्षकों की टीम को 'ट्रेन ट्रेनर्स टीम' के नाम से जाना जाता है। इस टीम ने चर्चगेट स्टेशन पर एकत्रित होकर एवं प्लेटफार्म एवं चलती ट्रेन में भी योग किया एवं यात्रियों को योग करने की तकनीकों का प्रशिक्षण भी दिया। मुंबई मंडल के विभिन्न स्थलों जैसे मुंबई मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, मुंबई सेंट्रल, चर्चगेट स्थित मोटरमैन लॉबी, आरपीएफ बैरक, सीनियर रेलवे इंस्टिटयूट सांताक्रूज (पूर्व) एवं अंधेरी में भी योग सत्रों के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री ए.के.गुप्ता महालक्ष्मी में आयोजित योग सत्र के साथ ही चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय के योग कार्यक्रम में भी उपस्थित थे। पश्चिम रेलवे के सभी छः मंडलों पर भी योग सत्र का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों में बड़ी संख्या में भाग लिया। पश्चिम रेलवे के मोटरमैनों के लिए चर्चगेट एवं मुंबई सेंट्रल की मोटरमैन लॉबी में मोटरमैन श्री मुनीश कुलश्रेष्ठ एवं उनकी टीम द्वारा विशेष योगा सत्र चलाया गया।

पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल ने अर्थ सम्वार्ता फाउंडेशन के साथ मिलकर सप्ताह भर चलने वाले एक जागरूकता अभियान का आयोजन किया। 5 जून, 2018 को विश्व पर्यावरण को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इस कार्यक्रम का उद्घाटन पश्चिम रेलवे के प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक श्री बी. आर. धारेश्वर द्वारा किया गया। इस जागरूकता सप्ताह के दौरान जगजीवन अस्पताल की डॉ. सविता गांगुर्डे तथा अर्थ सम्वार्ता की सीईओ चंद्रप्रभा शर्मा तथा मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक ओम शर्मा द्वारा जागरूकता हेतु संवाद सत्र, चित्रकारी प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता तथा वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा जगजीवन राम अस्पताल में एक नुक्कड़ नाटक का भी मंचन किया गया। जगजीवन राम अस्पताल कम्युनिटी के बच्चों को एक पौधा भी प्रदान किया गया, जिससे वे प्रकृति को संवारने में अपना योगदान दे सकें।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार पर्यावरण दिवस सप्ताह के पहले दिन बच्चों के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई, जहाँ उन्हें अपने सपनों की पृथ्वी का चित्रांकन करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। तत्पश्चात बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के तरीकों को अपनाने के संबंध में जागरूक करने हेतु एक संवाद सत्र का भी आयोजन किया गया। बच्चों ने पानी बर्बाद न करने, प्लास्टिक बैग के स्थान पर इको **फ्रेंडली** बैग ले जाने तथा पटाखे न जलाने की शपथ ली। अभियान के दूसरे दिन रोगियों के लिए एक संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें जगजीवन राम अस्पताल के मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक श्री ओम शर्मा तथा अर्थ सम्वार्ता फाउंडेशन की सीईओ सुश्री चंद्रप्रभा शर्मा ने कूड़े के

पृथक्करण के महत्त्व एवं प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। अर्थ सम्वार्ता फाउंडेशन द्वारा जगजीवन राम अस्पताल के चिकित्सकों के लिए भी एक संवाद सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र में जगजीवन राम अस्पताल को आत्मनिर्भर बनाने हेतु एक रोड मैप बनाने की बात कही गई। इसके पश्चात बच्चों द्वारा एक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। पर्यावरण दिवस के अंत में बच्चों के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों के निबंध में इस बात पर विशेष महत्त्व दिया गया कि पृथ्वी ही हमारा घर है तथा हमें अवश्य इसकी रक्षा करनी चाहिए। इसके पश्चात चित्रकारी तथा निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही सभी बच्चों को एक पौधा भी प्रदान किया गया।

पश्चिम रेलवे पर मनाया गया 'संरक्षा जागरूकता सप्ताह' एवं अंतरराष्ट्रीय समपार जागरूकता दिवस

7 जून, 2018 को मनाये जाने वाले **अंतरराष्ट्रीय** समपार जागरूकता दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे द्वारा चौकीदार रहित तथा सहित समपारों पर बिना सावधानी पार करने से होने वाले खतरों के बारे में लोगों को शिक्षित करने के लिए सभी छह मंडलों पर विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया। पश्चिम रेलवे पर 1 जून से 7 जून, 2018 तक संरक्षा जागरूकता सप्ताह मनाया गया। रेलवे ने रेल यात्रियों के साथ-साथ समपार फाटकों का इस्तेमाल करने वाले रेल उपयोगकर्ता की संरक्षा के संदेश के प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित कीं।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री रविंद्र भाकर द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार रेल समपारों पर काउंसलिंग की गई तथा रेल समपारों, ग्राम पंचायतों, गाँव स्थित स्कूलों तथा कॉलेजों में हैंडबिल और पैम्फलेट बाँटे गये। कान इयरफोन लगाते हुए रेल समपार पार करते समय होने वाले गम्भीर परिणामों के बारे में भी बताया गया। परस्पर संवाद के दौरान वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए रेलवे की मदद करने की अपील की। रेल समापार पार करते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में रेल उपयोगकर्ताओं, यात्रियों और सामान्य जनता को शिक्षित करने के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन भी किया गया। जागरूकता के लिए प्रमुख तथा स्थानीय भाषा वाले समाचार पत्रों में इससे **संबंधित** विज्ञापन दिये गये। समपार जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत स्कूलों में तथा समपार फाटकों पर कैप, कोस्टर्स, स्टियरिंग व्हील स्टीकर्स, पेंसिल स्टैंड, पेपर स्केल, पोस्टर और शार्पनर वितरित किये गये। समपार फाटकों पर विशेष जाँच/संरक्षा अभियान भी चलाये गये।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (डब्ल्यूआरडब्ल्यूडब्ल्यूओ) द्वारा स्तन कैंसर के विषय में स्वजागरुकता कैंप का आयोजन

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की मुंबई मंडल इकाई तथा "आई कैन विन फाउंडेशन" के सहयोग से महिला कर्मचारियों तथा समिति के सदस्यों के हित में मुंबई सेन्ट्रल स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के गूंज सभागृह में शुक्रवार, 20 अप्रैल 2018 को स्तन स्वजागरुकता शिविर का आयोजन किया गया । पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, चर्चगेट की सदस्या श्रीमती रश्मि मिश्रा की पहल से आयोजित इस शिविर में प्रख्यात कैंसर सर्जन तथा जे.पी.अस्पताल के अपर महानिदेशक डॉ. पवन गुप्ता ने इससे संबंधित एक घंटे तक का प्रस्तुतीकरण दिया, जिसके अंतर्गत इस बीमारी के मुख्य कारणों, लक्षणों तथा इसकी सरल स्वपरीक्षा की तकनीकी जानकारी दी गई । श्री गुप्ता ने बीमारी की रोकथाम के लिए महिलाओं को अपनी जीवनशैली बदलने पर जोर दिया । इस जागरुकता शिविर में लगभग 80 महिला रेल कर्मियों ने भाग लिया । इस शिविर में महिला कर्मचारियों को स्तन कैंसर पर **नि**:शुल्क लीफलेट तथा तंबाकू से बचने के बुकलेट (युवाओं को जागरुक करने हेतु)वितरित किए गए । कैंसर के प्रति किसी शंका को दूर करने हेतु एक प्रश्नोत्तरी सत्र का भी आयोजन किया गया । पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, मुंबई मंडल की अध्यक्षा श्रीमती रेणु जैन ने इस आयोजन का आमंत्रण स्वीकार करने तथा रेल कर्मियों के हित में इस शिविर में व्याख्यान देने हेतु डॉ. पवन गुप्ता को धन्यवाद दिया ।

मुंबई सेंट्रल मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांक 17.04.2018 को आयोजित स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति दादर की बैठक में भाग लेते हुए वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, मुंबई सेंट्रल साथ में अध्यक्ष एवं स्टेशन प्रबंधक व समिति के सदस्य.

दिनांक 04.05.2018 को आयोजित स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति बोरीवली की बैठक में भाग लेते हुए वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, मुंबई सेंट्रल साथ में अध्यक्ष एवं स्टेशन प्रबंधक व समिति के सदस्य.

दिनांक 08.05.2018 को आयोजित स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति चर्चगेट की बैठक में भाग लेते हुए वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, मुंबई सेंट्रल साथ में अध्यक्ष एवं क्षेत्र प्रबंधक व समिति के सदस्य.

दिनांक 15.06.2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते हुए मंडल के सभी अधिकारीगण एवं स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष

दिनांक 20.06.2018 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में आयोजित कार्यशाला में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए अमुराधि एवं अमंरेप्र(गैर-उप)

ई. एम.यू. कारखाना महालक्ष्मी की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

ई. एम. यू. कारखाना, महालक्ष्मी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दृश्य।

लोअर परेल कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

लोअर परेल कारखाना की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दृश्य।

वड़ोदरा मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का संचालन करते हुए सदस्य सचिव एवं राजभाषा अधिकारी।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान विचार व्यक्त करते हुए सदस्यगण।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए मंडल के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

प्रतापनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए कारखाना के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान विचार व्यक्त करते हुए सदस्यगण।

कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का संचालन करते हुए सदस्य सचिव।

अहमदाबाद मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान मनाई गई कवि जयंती के अवसर पर कवि के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए अधिकारी।

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए सदस्यगण।

मंडल में आयोजित हिंदी कार्यशाला का दृश्य।

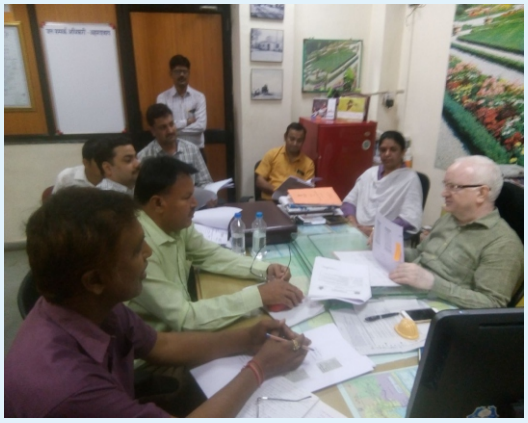

अहमदाबाद मंडल के अधीन विभिन्न स्टेशनों पर आयोजित स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के दृश्य।

साबरमती कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांक:21-06-2018 को आयोजित श्री विष्णु प्रभाकर की जयंती के अवसर पर उप मुख्य सामग्री प्रबंधक श्री राजेन्द्र सोनी उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए।

दिनांक:29-06-2018 को आयोजित श्री कबीर जयंती के अवसर पर वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी श्री एच. ए. भट्ट उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए।

दिनांक:29-06-2018 को सिगनल व दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए वरिष्ठ अनुवादक श्री नवनीत धनेरिया।

दिनांक:29-06-2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागिता करते हुए कर्मचारीगण।

दिनांक:21-04-2018 को आयोजित संगोष्ठी में सहभागिता करते हुए अधिकारीगण।

दिनांक:21-04-2018 को आयोजित संगोष्ठी में सहभागिता करते हुए कर्मचारीगण।

दिनांक:31-05-2018 को आयोजित हिंदी कुंजीयन तथा टेबल ट्रेनिंग के दृश्य।

दिनांक: 21.06.2018 को आयोजित कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए सदस्यगण।

राजकोट मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

स्टेराकास-जामनगर में दिनांक 26.06.2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए राजभाषा अधिकारी एवं प्रतिभागी कर्मचारी।

स्टेराकास-वांकानेर में दिनांक 17.05.2018 को आयोजित तिमाही प्रगति की समीक्षा बैठक का दृश्य।

मंराकास-राजकोट की दिनांक 15.06.2018 को आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं मंरेप्र।

भावनगर मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

मंडल रेल प्रबंधक महोदया नराकास बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

मंडल रेल प्रबंधक महोदया की अध्यक्षता में मराकास बैठक का आयोजन।

दि. 06/06/2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में मंडल रेल प्रबंधक महोदया **साहित्यकार** आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए।

दि. 25/06/18 को उना में आयोजित कार्यशाला में **व्याख्यान** देने हुए राजभाषा अधिकारी श्री रमेश कुमार एवं मुख्य चिकित्सा अधिक्षक श्री पी.पी. वाघ।

मंडल रेल प्रबंधक महोदया की अध्यक्षता में आयोजित मंराकास की बैठक में उपस्थित सदस्यगण।

प्रेमजाल

एक बच्चे को आम का पेड़ बहुत पसंद था। जब भी फुर्सत मिलती वो आम के पेड़ के पास पहुँच जाता। पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया में सो जाता। उस बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनोखा रिश्ता बन गया।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया। कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद हो गया। आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता। एक दिन अचानक पेड़ ने उस बच्चे को अपनी तरफ आते देखा और पास आने पर कहा- 'तू कहां चला गया था ? मैं रोज तुम्हेंयाद किया करता था। चलो आज फिर से दोनों खेलते हैं'। बच्चे ने आम के पेड़ से कहा' अब मेरी खेलने की उम्र नहीं है, मुझे पढ़ना है, लेकिन मेरे पास फीस भरने के पैसेनहीं हैं'। पेड़ ने कहा- 'तू मेरे आम लेकर बाजार में बेच दे, इससे जो पैसे मिले अपनी फीस भर देना'। उस बच्चे ने आम के पेड़ से सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहाँसे चला गया।

उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दिया। आम का पेड़ उसकी राह देखता रहता। एक दिन वो फिर आया और कहने लगा, 'अब मुझे नौकरी मिल गई है, मेरी शादी हो चुकी है, मुझे मेरा अपना घर बनाना है, इसके लिए मेरे पास अब पैसे नहीं हैं'। आम के पेड़ ने कहा, 'तू मेरी सभी डाली को काट ले जा, उससे अपना घर बना ले'। उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट ली और ले कर चला गया।

आम के पेड़ के पास अब कुछ भी नहीं था, वो अब बिल्कुल बंजर हो गया था। कोई उसे देखता भी नहीं था। पेड़ ने भी अब उम्मीद छोड़ दी थी कि अब वो बालक/जवान उसके पास फिर आएगा। फिर एक दिन अचानक वहाँ एक बुढ़ा आदमी आया। उसने आम के पेड़ से कहा, 'शायद आपने मुझे नहीं पहचाना, मैं वहीं बालक हूँ जो बार-बार आपके पास आता और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर भी मेरी मदद करते थे'। आम के पेड़ ने दुःख के साथ कहा, 'पर बेटा मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं जो मैं तुम्हें दे सकुँ'। वृद्ध ने आंखों में आँसु लिए कहा' आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूँ बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भरके खेलना है, आपकी गोद में सर रखकर सो जाना है'। इतना कहकर वो आम के पेड़ से लिपट गया और आम के पेड़ की सुखी हुई डाली फिर से अंकुरित हो उठी।

वो आम का पेड़ कोई और नहीं हमारे माता-पिता हैं। जब छोटे थे उनके साथ खेलना अच्छा लगता था। जैसे-जैसे बड़े होते गए उनसे दूर होते गए। पास भी तब आये अब कोई जरुरत पड़ी, कोई समस्या खड़ी हुई। आज कई माँ-बाप उस बंजर पेड़ की तरह अपने बच्चों की राह देख रहे हैं। जाकर उनसे लिपटें, उनके गले लग जायें, फिर देखना वृद्धावस्था में उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा।

शम्भू सिंह,
मुख्य जनसंपर्क निरीक्षण, भावनगर

भावनगर कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

हिन्दी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए सकाप्र श्री विमलेश चन्द्र.

आचार्य महावीर प्रसाद की जन्म जयंती के अवसर पर श्रद्धांजली अर्पित करते हुए मुकाप्र श्री आर. बी. विजयवर्गीय.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की मासिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुकाप्र श्री आर.बी. विजयवर्गीय.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में सहभागिता करते हुए सदस्यगण.

रतलाम मंडल की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः 17-05-2018 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रतलाम की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

दिनांकः 17-05-2018 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रतलाम की बैठक में सदस्य अपने विचार रखते हुए।

दिनांकः 17-05-2018 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रतलाम की बैठक में सहभागिता करते हुए सदस्यगण।

दिनांकः 17-05-2018 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रतलाम की बैठक के दौरान राजभाषा लीफलेट एवं साहित्यकारों की प्रेरक रचनाओं के पोस्टरों का विमोचन करते हुए अधिकारीगण।

दिनांकः 12-06-2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते हुए मंडल रेल प्रबंधक।

दिनांकः 12-06-2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का संचालन करते हुए सदस्य सचिव एवं राजभाषा अधिकारी।

दिनांकः 12-06-2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में राजभाषा पत्रिका का विमोचन करते हुए उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं मंडल रेल प्रबंधक।

दिनांकः 12-06-2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए मंडल के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

दिनांकः 12-06-2018 को आयोजित मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए प्रधान कार्यालय से उप महाप्रबंधक (राजभाषा)।

दाहोद कारखाना की राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

दिनांकः26.06.2018 को दाहोद कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य कारखाना प्रबंधक।

दिनांकः26.06.2018 को दाहोद कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में सहभागिता करते हुए अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

1) दिनांक 22-05-2018 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दाहोद की 15वीं बैठक आयोजित की गई । इस बैठक में मुख्य कारखाना प्रबंधक जी ने अध्यक्षता करते हुए सभी कार्यालयों से प्राप्त आँकडों पर सभी अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया तथा समस्त अधिकारियों को राजभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान देने के लिए निर्देश दिए ।

2) दिनांक 04.06.2018 से 08.06.2018 तक दाहोद कारखाना में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस हिन्दी कार्यशाला में कर्मचारियों को तकनीकी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करने एवं हिन्दी में पत्राचार करने का अभ्यास कराया गया ।

3) दिनांक 26.06.2018 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति,कारख़ाना-दाहोद की बैठक आयोजित की गई । इस बैठक में मुख्य कारखाना प्रबंधक जी ने अध्यक्षता करते हुए सभी कार्यालयों से प्राप्त आँकडों पर अधिकारियों/अनुभाग प्रभारियों के साथ विचार-विमर्श किया तथा अधिकारियों/अनुभाग प्रभारियों को राजभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान देने के लिए निर्देश दिए ।